

## दशलक्षण धर्म पूजन

(पं. दानतरायजी कृत)

(अनुष्टुप) स्थापना (संस्कृत)

उत्तमक्षान्तिकाद्यन्त-ब्रह्मचर्य-सुलक्षणम् ।

स्थापय दशधा धर्ममुत्तमं जिनभाषितम् ॥

(अडिल्ल) स्थापना (हिन्दी)

उत्तम क्षमा मारदव आरजव भाव हैं,

सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं ।

आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं,

चहुंगति-दुखतैं काढ़ि मुकति करतार हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(सोरठा)

हेमाचल की धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि ।

भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति  
दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा ।

भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा ।

अमल अखण्डित सार, तन्दुल चन्द्र समान शुभ ।

भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा ।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरध-लोकलों ।

भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि. स्वाहा ।

नेवज विविध निहार, उत्तम षट्-रस-संजुगत ।

भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा ।